अंधा, कुबड़ा और त्रिस्तनी

उत्तरी प्रदेश मे मधुपुर नाम का एक नगर है। वहाँ मधुसेन नाम का एक राजा था। विषय सुख भोगने वाले उस राजा मधुसेन को एक तीन स्तनो वाली कन्या उत्पन्न हुई। तीन स्तनो वाली कन्या की उत्पत्ति सुनकर राजा ने कंचुकियो से कहा--"भाई! यह त्रिस्तनी कन्या को दूर जंगल मे ले जाकर छोड दो कोई जानने भी न पाये।" यह सुनकर कंचुकियो ने कहा--"महाराज! यह तो मालूम है ही कि तीन स्तनो वाली कन्या अनिष्ट करने वाली होती है, फिर भी ब्राह्मण बुलाकर उससे पूछ लेना चाहिए, जिससे दोनो लोक बने रहे, क्योंकि--

जो बराबर दूसरो से पूछता रहता है, सुनता रहता है और यथार्थ बाते धारण करता रहता है उसकी बुद्धि सूर्य की किरणो से कमलिनी की तरह बराबर बढती रहती है। और भी नई जानकारी मनुष्य को सदा पूछते रहना चाहिए। प्राचीन काल मे राक्षसराज द्वारा पकडा हुआ भी एक ब्राह्मण पूछने के कारण छूट गया।"

राजा ने पूछा--"यह कैसे ?"

कंचुकियों ने कहा-

ब्राह्मण और राक्षसराज

देव! किसी जंगली प्रदेश में चंडकर्मा नाम का एक राक्षस रहता था। एक बार वह जंगल मे घूम रहा था कि उसे एक ब्राह्मण मिला। वह उसके कंधे पर कूदकर बैठ गया और बोला--"अरे! आगे-आगे चलो।" ब्राह्मण भी बहुत डर गया, वह उसे कंधे पर लेकर चलने लगा। रास्ते मे कमल की पंखुडियो के समान कोमल राक्षस के पैरो के तलवे को देखकर ब्राह्मण ने पूछा- "भाई! आपके पैर क्यो इतने कोमल है?"

राक्षस बोला--"भाई मैंने व्रत रखा है कि गीले पैरो से भूमि का स्पर्श नही करता।" यह सुनकर ब्राह्मण अपने छुटकारा पाने का उपाय सोचता हुआ एक सरोवर के किनारे पहुँचा। वहाँ पहुँचने पर राक्षस ने कहा--"जब तक मैं स्नान और देवपूजा करके न आऊँ तब तक तुम इस स्थान से कही नही मत जाना।" यह कहकर राक्षस सरोवर मे नहाने चला गया। ब्राह्मण ने सोचा कि यह देवपूजन करने के बाद निश्चय ही मुझे खा जायगा| इसलिए मैं जल्दी से भागूं

जिससे वह गीले पैरो से मेरे पीछे न आ सके।' ब्राह्मण ने वैसा ही किया। व्रत टूटने के डर से राक्षस भी उसके पीछे नही गया।

इसलिए सब कहते है कि “जानकार आदमी को भी दूसरे से पूछते रहना चाहिए। बडे राक्षस से भी पकडे जाने पर सवाल पूछने से ब्राह्मण छूट गया।”

उसकी बात सुनकर राजा ने ब्राह्मणो को बुलाकर पूछा, "हे ब्राहमणो! मेरे यहां त्रिस्तनी कन्या का जन्म हुआ है। इसकी शांति का कोई उपाय है या नही?
ब्राह्मणो ने कहा-- देव ! सुनिए--
“मनुष्य के यहां कम अथवा अधिक अंगों वाली जो कन्या पैदा होती है, वह अपने पति और शील का नाश करती है। इनमे से भी अगर तीन स्तनो वाली कन्या अपने पिता की नजर पडे, तो वह तुरन्त अपने पिता का नाश कर देती है,इसमे संदेह नही।"
इसलिए इस लडकी को आपको नही देखना चाहिए। अगर कोई इस कन्या के साथ विवाह करे तो उसे इस कन्या को देकर देश से बाहर कर दीजिए। ऐसा करने से आपके दोनों लोक सुधरेगे।"
उनकी यह बात सुनकर राजा ने डंके की चोट पर मुनादी करा दी, "लोगो ! इस त्रिस्तनी कन्या के साथ जो कोई ब्याह करेगा, उसे एक लाख सुवर्ण मुद्रा उसी समय मिलेगा और उसे देश भी छोडना पड़ेगा।" मुनादी किये हुए बहुत दिन बीत गए, फिर भी उस कन्या को लेने को कोई तैयार न हुआ। वह जवान होने तक छिपे स्थान मे रहकर यत्नपूर्वक पल-पुसकर बढने लगी।

उसी नगर मे कोई अंधा रहता था। उसका मंथरक नाम का एक कुबडा आगे लकडी पकडने वाला था। उन दोनो ने डुग्गी सुनकर आपस में विचार किया, "भाग्यवश कन्या मिलती हो तो हमे डुग्गी रोकनी चाहिए, जिससे सोना मिले जौर उसके मिलने से हमारी जिंदगी सुख से कटे। उस कन्या के दोष से कही मैं मर गया तो भी दरिद्रता से पैदा हुई उस तकलीफ से छुटकारा मिल जायगा।
और कहा है कि-

"लज्जा, स्नेह, वाणी की मिठास, बुद्धि, जवानी, स्त्रियो का साथ, अपनो का प्यार, दुःख की हानि, विलास, धर्म, तन्दुरुस्ती, वृहस्पति जैसी बुद्धि, पवित्रता, और आचार-विचार ये सब बाते, आदमियो का पेट-रूपी गढा जब अन्न से भरा होता है, तभी संभव है।"
यह कहकर उस अंधे ने मुनादी करने वाले को रोक दिया और कहा, "मैं उस राजकन्या से विवाह करूंगा, यदि राजा मूझे उसे देगा।" बाद मे राज कर्मचारियो ने जाकर राजा से कहा, "देव! किसी अंधे ने मुनादी रोक दी है, इस बारे मे क्या करना चाहिए ?"
राजा ने कहा- "अंधा हो, बहरा हो, कोढी हो या चाण्डाल हो, कोई भी हो यदि वह राजकन्या लेना चाहता है, वो उसे एक लाख सुवर्ण मुद्रा के साथ देश निकाला दिया जायेगा।"
राजा ने आज्ञा दे दी। राजपुरुषो ने नदी के किनारे ले जाकर एक लाख सुवर्ण मुद्रा के साथ त्रिस्तनी कन्या का उस अन्धे के साथ विवाह कर दिया। और उसे जलयान (जहाज) पर बैठाकर केवटो से कह दिया- "केवटो ! विदेश मे ले जाकर इस अंधे, कुबडे और राजकन्या को किसी नगर मे छोड देना।"

केवटो ने वैसा ही किया। उन्होने जहाज मे बैठाकर उसे विदेश मे ले जाकर एक नगर मे पहुँचा दिया। केवटो के दिखाने पर रुपये से उसने एक सुन्दर महल खरीद लिया और तीनो बडे आराम के साथ वहाँ अपनी जिन्दगी का समय बिताने लगे। केवल अन्धा सदा पलंग पर सोया रहता था। घर का सारा कारबार कुबडा करता था। इस तरह उनका समय आराम से कटा चला जा रहा था कि कुछ ही दिनो मे कुबडे के साथ राजकन्या का अनुचित सम्बन्ध स्थापित हो गया। यह ठीक ही कहा गया है कि- "यदि आग शीतल हो जाय, चन्द्रमा जलाने वाला बन जाय, समुद्र का पानी मीठा हो जाय तब स्त्रियो को सतीत्व हो सकता है।"
कुछ दिन बीतने पर त्रिस्तनी ने मन्थरक से कहा- "हे सुन्दर! यदि किसी तरह यह अन्धा मर जाय तो हम दोनो सुख की जिन्दगी बिताएँ। कही से ढूँढकर तुम विष ले आओ, उसे देकर मैं इसका काम तमाम कर दूँ और सुखी बनूँ।"

दूसरे दिन घूमते हुए कुबडे को एक मरा हुआ काला साँप मिला। उसे लेकर वह प्रसन्न मन से घर वापस लौटा और त्रिस्तनी से बोला- “सुन्दरी! यह एक काला साँप मिल गया है। इसे टुकडे-टुकडे काटकर खूब अधिक सोंठ-मिर्च डालकर अच्छे स्वाद का बना डालो। उस अंधे को मछली का मांस बताकर इसे खिला दो। इसे खाते ही वह खत्म हो जायगा, क्योंकि उसे मछली का मांस सदा बहुत रुचिकर लगता है।"

यह कहकर मन्थरक बाहर चला गया। त्रिस्तनी ने तुरंत आग जलाई और काले साँप को टुकडे टुकडे काटकर उसमे मट्ठा डालकर चढा दिया और घर के दूसरे कामो मे व्यस्त होने के कारण अंधे के पास आकर विनय के साथ कहा-- आर्य पुत्र आज तुम्हे बहुत अधिक पसन्द आने वाली मछली का मांस मैंने मँगा रखा है, तुम हमेशा उसे पूछा करते थे। उसे मैंने पकाने के लिए आग पर चढा दिया है, मैं जब तक दूसरे कामों को निपटा लूँ तब तक तुम करछी लेकर थोडी देर उसे चला दो।”

यह सुनकर अन्धा बहुत खुश हुआ। वह जीभ चाटते हुए तुरन्त पलंग से उठ बैठा और करछी लेकर उसे चलाने लगा। मछली का मांस समझकर कडाही मे चलाते हुए उस अंधे की आँखो पर छाया हुआ काला परदा साँप की विषैली भाप की गरमी से गलने लगा। उसे तुरन्त बहुत लाभ मालूम होने लगा। फिर तो उसने खूब फैला-फैलाकर आँखो मे उसकी भाप ली। इस तरह थोडी देर मे उसकी आँखे जब एकदम साफ हो गई तो उसने देखा कि कडाही मे केवल मट्ठा है और उसमे काले साँप के छोटे-छोटे टुकडे पक रहे है, तब उसने सोचा- अरे! इसने क्यों मुझे मछली का मांस बताया, यह तो काले साँप के टुकडे है। तो मैं इसका अच्छी तरह पता लगा लूँ कि इस त्रिस्तनी का मुझे मारने का यह इरादा है या कुबडे का। या किसी दूसरे ने तो ऐसा नही किया है। इस तरह की बाते सोचता हुआ, वह अपने इरादे को छिपाकर पहले की तरह अन्धा बनकर उसे चलाता रहा। इसी बीच कुबडा बाहर से आ गया। उसे किसी का कोई डर तो था नही, आने के साथ ही त्रिस्तनी आलिंगन एवं चुम्बनादि करने लगा। उस अन्धे ने कुबडे की सारी करतूत देख ली, उसे जब समीप मे उन्हे मारने का कोई हथियार नही दिखा तो वह क्रोध से व्याकुल होकर पहले की तरह अंधा बन कर उन दोनो की शैय्या के पास गया। वहाँ जाकर उसने मजबूती के साथ कुबडे के

दोनो पैरो को पकडकर अपने सिर के ऊपर घुमाया और घुमाने के बाद त्रिस्तनी की छाती पर उसे जोर से पटक दिया। कुबडे के मारने से त्रिस्तनी का तीसरा स्तन छाती के भीतर बैठ गया और जोर से ऊपर घुमाने के कारण कूबडे की टेढी कमर भी सीधी हो गई।
इसलिए से मैंने कहा कि, 'अन्धा, कुबड़ा...इत्यादि।'

यह सुनकर सुवर्णसिद्धि ने कहा--“भाई! यह सच है यद्यपि दैव अनुकूल होने पर सर्वत्र कल्याण ही कल्याण होता है, किन्तु फिर भी मनुष्य को सत्पुरुषो का कहना मानना चाहिए। कभी टूटकर किसी से नही चलना चाहिए। जो बाते न मानकर टूटकर तुम्हारी तरह व्यवहार करता है, वह निश्चय ही विनाश के गड्ढे मे गिरता है। और भी सुनिये- एक ही उदर और अलग कण्ठ वाले, एक दुसरे का फल खाने वाले आपस मे मेल न होने के कारण भारण्ड पक्षी की तरह नाश होते है।"

चक्रधर बोला--“यह कैसे ?”

उसने कहा-

दो सिर वाला पक्षी (भारण्ड)

ऄंण, ऴुआ ऒय डिऄज़ी

उञ्जी ऩूर्ष भ भिणऩुऱ नाभ का एक नगय हा वहा भिणबिं नाभ का एक याजा था। विषम भाऩ हयोन वार उभ याजा भणबिं क एक डीन भज़ वारी कन्मा उञ्जन्न हुई। डीन भज़ वारी कन्मा की उञ्जिग्भज़कय याजा न कोणि किम भ कहा--“हाम! मह डिऄज़ी कन्मा क भुझ एंगल भल हकय ळह द कहीं हनन हो न ऩामा” मह भज़कय कोणि किम न कहा--

“भहायाज! मह ड भालभ हहो कि डीन भज़ वारी कन्मा अनिषृकायन वारी होडी ह, फिय बी गुहज़ ग़ल्ला कय उभभ ऩूळ लना षाहिए, जिभभ दनी लोक गन यह, क्मोंकि--

ए ठेयाकय डभ्र भ ऩूळडा यहडा ह, भज़डा यहडा ह ओय वषाघू गाड णाय ंण कयडा यहडा ह उभकी गुज़्भड्र की किय ंण भ कभलिनी की ड्रयह गायाकय ग़्डी यहडी ह ओय ही नई हनकायी भनषूक भोड ऩूळडा यहना षाहिए। ऩूषीन कार भ याऺभयाज ग्झा ऩकहा हुआ बी एक गुहज़ ऩूळन क कायंण ळूट गमा।”

याजा न ऩूळा--“मह कभ?”

कोणि किम न कहा-

गुहज़ ओय याऺभयाज

दव! किभी एंगली ऩूर्ष भ षण्कज़ नाभ का एक याऺभ यहडा था। एक फाय वह एंगल भ घूभ यहा था कि उभ एक गुहज़ भिला। वह उभक कोण ऩय कूडकय फठ गमा ओय फोला--“आय! अुग-अुग षल।” गुहज़ बी गुहडू हय गमा, वह उभ कोण ऩय रकय षलन लगा। याभ्डभ कभल की ऩांऩूडिम क भभान कोभल याऺभ क ऩयों क डरव क दखकय गुहज़ न ऩूळा- “हाम! अुऩक ऩय इडन कोभल ह?”

याऺभ फोला--“हाम भन वूड याया ह कि गील ऩयों भ ऩृथि का भ्श नहीं कयडा।” मह भज़कय गुहज़ अऩन ळूटकाया ऩान का उऩाम भोषडा हुआ एक भयोवय क किनाय ऩहुषा। वहा ऩहुषन ऩय याऺभ न कहा--“एफ डक भ भ्नान ओय दवऩूजा कयक न अुड डफ डक डुभ उभ भ्रून भ कहीं नहीं भड हना।” मह कहकय याऺभ भयोवय भ नहान षला गमा। गुहज़ न भोषा कि मह दवऩूजन कयन क फाद निम्शम ही भुझ षा हवगा | उभलिए भ एल्ली भ डाग कु जिभभ वह गील ऩयों भ भय ऩीळ न अु भक। गुहज़ न वभा ही किमा। वड ण्य न क डय भ याऺभ बी उभक ऩीळ नहीं गमा।

उभलिए भय कहड ह कि “हनकाय अुडभी क बी डभ्र भ ऩूळड यहना षाहिए। फह याऺभ भ ही ऩकहा हन ऩय भवार ऩूळन भ गुहज़ ळूट गमा।”

उभकी फाड भज़कय याजा न गुहज़ क फुलाकय ऩूळा, "ह गुहभण! भय वहा डिऄज़ी कन्मा का हनज़्भ हा उभकी षांडि का कई उऩाम ह मा नहीं? गुहज़ न कहा-- दव ! भुनिए--

“भनषूक वहा कभ अुथवा अधिक अुंग वारी एक कन्मा ऩडि हडी ह, वह अुऩन ऩडि ओय भील का नाभ कयडी ह उनभ भ बी अुगय डीन भज़ वारी कन्मा अुऩन ऩिडा की नज़य ऩह, ड वह डुयन्ड अुऩन ऩिडा का नाभ कय दडी ह, उभभ भंदह नहीं।"

उभलिए उभ लहकी क अुऩक नहीं दखना षाहिए। अुगय कई उभ कन्मा क भाथ विवाह कय ड उभ उभ कन्मा क लकय दषर भ गाहय कय दीजिए। एभा कयन भ अुऩक दनों लोक भुधयग।"

उनकी यह गाउ भनुकर राएर न ठेक की ाएँ पर भजामी करा मी, "लगो ! उम डिभनी कनाट क भाम ए कोई गहूह करगा, उम एक लााप मवूल भाट उमी मभय मिलगा छार उम टम ही कठना पड़गा।" भजामी किय होए गहउ मिन गीउ गाए, फिर ही उम कनाट क लेन के कोई उपाय न हुआ। वह एवान होने उक ठिपभाटन म रहकर यउपूवक पल-पभकर गढ़न लगी।

उमी नगर म कोई मंण रहउा मा। उमका मंमरक नाम का एक हवुडा मुग लकड़ी पकड़न वाला मा। उन टनों न ठेगुमिनकर मुपभ म विचार किया, "हागवम कनाट मिलउी ह उ ठभ ठेगुमिन केनी माहिए, एमभ मेरा मिल एगा उमक मिलन म हभारी एंडगी भाप म कए। उम कनाट क टेपे म कोई भभिर गया उ ही दरिटउा म पड़ा हुआ उम उकलीफ म ठेटकारा मिल एवगा। छार कहा ह कि-

"लाए, भकि, वाणी की मिठाम, गुन्धि, एवानी, भित्र का माम, मपन का पउर, टााप की हानि, विलाम, एगभउनटुभी, वरुमटि एमी गुन्धि, पवितउा, छार मुमार-विमार य मेर गाउ, मुटमिय का पटे-रपी गमा एर मन भ ठेरा हउी ह, उोही मंडव हा"

यह कहकर उम मंण न भजामी करन वाल को रोके दिया छार कहा, "म उम राएकनाट म विवाह करंगा, यदि राए भए उम टेगा।" गाद म राएा कगमारियो न एकर राए म कहा, "टेवा! किमी मंण न भजामी रके मी ह, उम गार म कट करना माहिए ?"

राए न कहा- "मंण ह, गेहरा ह, कोई ही हो माण्डल ह, कोई ही हो यदि वह राएकनाट लनो माहउा ह, वे उम एक लााप मवूल भाट क भाम टम निकाला दिया एवगा।"

राए न मुझ टमी। राएपडुप न नेमी क किनार ल एकर एक लााप मवूल भाट क भाम डिभनी कनाट का उम मनूक भाम विवाह कर दिया। छार उम एलवान (एहाए) पर गढ़ाकर कवट म कह दिया- "कवट ! विटम म ल एकर उम मंण, हवुड छार राएकनाट क किमी नगर म छेड़ टना।"

कवट न वमा ही किया। उनको एहाए म गढ़ाकर उम विटम म ल एकर एक नगर म पहुंमा दिया। कवट क दिपान पर रुपय म उमन एक मनूम भहल परीट लिया छार तीन रोह मुराभ क भाम वहा मपनी एनगी का मभय गिउान लगा। केवल मनूम भट पलंग पर मये रहउा मा। भर का मारा कारगार हवुडा करउा मा। उम उरह उनका मभय मुराभ म कए मला ए रहा मा कि कुछ ही दिन म हवुड क भाम राएकनाट का मनपिउ मभनूभ पिउ हो गया। यह ठीक ही कहा गया ह कि- "यदि मुग मीउल हो एव, मनभा एलान वाला गन एव, मभट का पानी भीठा हो एव उग भित्र क मेडीउ हो मकउ हा"

कुछ दिन गीउन पर डिभनी न भना पाक म कहा- "हे मनूमा! यदि किमी उरह यह मनूम मर एव उ ठभ टनो भाप की एनगी गिउाए कही म ठेठकर उभ विप ल मुउ, उम टकर भ उमका काम उभाम कर ट छार मापी गन।"

दुमर दिन पभउ हुए हवुड को एक मरा हुआ काला माप मिला। उम लकर वह पभन भन म पर वापम लोए छार डिभनी म गोले- "भनूमी! यह एक काला माप मिल गया ह। उम ठेकड़-ठेकड़ काएकर पिउ मपिक भठे-भिरा डालकर मभ्जीाभट का गना डाल। उम

ग्रंथ के भिक्षली का भांस गड़ाकर उस पिलाता था। उस पिताउसी वह पिड्फ देखेगा, क्योंकि उस मिक्षली का भांस मदा गहड़ हपिकर लगाड़ था।

वह कहकर मनुष्क गहर चला गया। ठिमझी ने ठेड़ुड़ सुग दूलाएँ छर काल साँप को एकुड़ एकुड़ कोएकर उसमें मिलालकर चाद दिया छर थार क दुस्र कास में ठेमझ, हने के कारण ग्रंथ के पास मुकर विनय क साथ कहा-- मुद पड़ मुस्ल ठसु्मेहड़ मुणिक पसनम्मुन वाली मक्षली का भांस भरने भेंगा गया ह, ठसु्हसमी उस पेका करत था। उस भरने पेकान के लिए मुग पर चाद दिया ह, में देर ठक दुस्र कास के निपएल ठेग ठक ठसु करछी लेकर घरी दरे उस चिलाता रहा।"

वह मनकर मनुष्क गहड़ पिसु हुसा। वह दूसर चापरड़ाए ठसुन पलंग में ठठ गठ छर करछी लेकर उस चिलाने लगा। मक्षली का भांस समाएकर कहाही में चिलाड़ाए उस ग्रंथ की मुपि पेर छाया हुसा काला पदा साँप की विषली हाप की गरमी में गलने लगा। उस ठेड़ुन गहड़ लाड भालम हने लगा। फिर ठ उसन पिवृ दलो-दलोकर मुपि में उसकी हाप ली। उस ठरह घरी दरे में उसकी मुपि देर एकदम साफ हो गई ठ उसने देखा कि कहाही में केवल मसुड़ छर उसमें काल साँप के ठुकड़े-ठुकड़े एकुड़ पेक रह ह, ठब उसने सोचा- सर! उसने ठभा मक्षली का भांस गड़ाया, वह ठ काल साँप क एकुड़ ह ठ में उसका ग्रंथ ठरह पड़ लगा ल्ोकि उस ठिमझी का भारू सारन को वह ठपाय हथा क्युड़ का। या किसी दुस्र ने ठ ऐसा नहीं किया हो उस ठरह की गरठ सोठड़ हुसा, वह ग्रपने उपाय को छिपाकर पहल की ठरह ग्रन्ध गनकर उस चिलाड़ा रहा। उसी गीच क्युड़ गहर से सु गया। उस किसी का कहीं डर ठ था नहीं, मुन के साथ ही ठिमझी मुलिंगन एवं चसुन्नाकि करन लगा। उस ग्रन्ध ने क्युड़ की भारी करठुड़ दापि ली, उस देर समीप में ठन्मारन को कहीं हथियार नहीं दिखा ठ वह क्रोध से व्याकुल होकर पहल की ठरह ग्रंथ गन कर ठन दोनों की सधेट के पास गया। वहा देकर उसने मेरगड़ी क साथ क्युड़ के दोनों पेरों को पकड़कर ग्रपने सिर क ऊपर घुमाया छर घुमाने के गाद ठिमझी की छाड़ी पर उस देर से पटक दिया। क्युड़ के भारने से ठिमझी का ठीसरा मड़ छाड़ी क ठीठर गठ गया छर देर से ऊपर घुमाने के कारण क्युड़ की एड़ी कमर ही सीधी हो गई।

उसलिए में भरने कहा कि, 'ग्रन्ध, क्युड़ा...ठठ्यदि।'

वह मनकर मदरूसिम्ब्र ने कहा--"हाँ! वह सच ह थेदि दवे ग्रनुकूल हने पेर सदड़ कलहण ही कल्याण हड़ ह, किन्तु फिर ही सनुष्क क सैठ्रूथ का कहना मानना चाहिए। कभी एठकर किसी से नहीं चलना चाहिए। हे गेड़ ने मानकर एठकर ठसुक्ति ठरह वृढ़हार करठ ह, वह निमसु ही विनाश क गर्ह्भ गिरठ ह छर ही मन्त्रि-एक ही उदर छर ग्रलग कण्ठ वाल, एक दुस्र का फल पिान वाल मुपस में मेल न हने क कारण भारण्ड पक्षी की ठरह नाश हठ ह।"

चक्र्र गोला--"वह कैस?"

उसन कहा-

दो सिर वाला पक्षी (भारण्ड)

ग्रनुवाद - ठिर्न्ना पिसो